प्रातःक्लास 13.3.68 ओमशान्ति पिताश्री

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। वास्तव में इसको कहा ही जाता है रावण राज्य। हिंसा ही हिंसा है। हिंसा को कोस घर भी कहा जाता है। कसाई होते हैं ना, बकरी को मारते हैं, यह भी हिंसा है। सबसे बड़ी ते बड़ी हिंसा कौन–सी है? काम कटारी चलाना। बाप कहते हैं काम महाशत्रु है। एक/दो पर काम कटारी चलाना यह है सबसे बड़ी ते बड़ी हिंसा। आधा कल्प है हिंसा, आधा कल्प है अहिंसा। हिंसा को कोस कहा जाता है। बाप बैठ समझाते हैं यह है रावण राज्य। ऐसा कोई है नहीं जो विकार बिगर रह सके। साधु ,संत, सन्यासी आदि सभी विकार से ही पैदा होते हैं। सारी दुनियाँ कोसखाना चलता ही रहता है। मन्दिर में इतने मनुष्य जाते हैं, वहां ही फिर शादी के लिए हॉल भी बनाये हुये हैं। गोया वह कोसघर हुआ ना। विकार के लिए शादी होती है। अभी भगवानुवाचः बेहद के बाप भगवान ने तो कहा है काम महाशत्रु है। इस पर जीत पह(न)ने, अहिंसक बनने से तुम स्वर्ग के मालिक बन सकते हो। मैं आया ही हूँ हिंसक दुनियाँ को अहिंसक बनाने तो फिर हिंसा थोड़े ही करनी चाहिए। हिंसा का कोई काम न करना चाहिए। बाबा ने इस पर मुरली भी चलाई थी शिव के मन्दिर भी हैं, वहाँ ही ल.ना. का चित्र, वहाँ ही राम–सीता का चित्र, वहाँ ही फिर कोसघर बनाते हैं। कहाँ देवताएँ अहिंसक , जो स्वर्ग में राज्य करते थे! उनके मन्दिरों में फिर कोसघर बनाते हैं! इस समय सारी दुनियाँ को ही कोसघर कहा जाता है। मन्दिरों में शादी के लिए हॉल बनाते हैं। पैसे बहुत हैं तो यही हिंसा की ख़्यालात आती रहती। रावण राज्य है ना। अभी तुम बच्चे हिंसा नहीं करते हो। तुम जानते हो अभी अहिंसक दुनियाँ स्थापन हो रही है। तुम जानते हो इन देवताओं का राज्य था जहां हिंसा बिल्कुल नहीं थी। कोस नहीं करते थे। अभी कहते भी हैं बाबा हम पापात्मा बन गये हैं। एक/दो को कोस करते रहते हैं ; परन्तु अपन को पतित समझते नहीं हैं। बुद्धि बिल्कुल तमोप्रधान बन गई है। राइट–रॉंग को समझ न सके। सतयुग है ही राईटियस वर्ल्ड। यह हे अनराईटियस वर्ल्ड। बेहद का बाप कहते हैं एक/दो पर काम कटारी चलाना यह है सबसे बड़ा पाप। काम महाशत्रु है। यह बहुत पापात्मा बनाते हैं। रावण राज्य में ही कोस घर शुरू होता है। गिरते–2 मनुष्य पापात्मा, अजामिल जैसे बन पड़े। जो देवताएँ थे वही ड्रामा प्लैन अनुसार नीचे गिरते तमोप्रधान मनुष्य बने हैं। जब से वाममार्ग में गये हो तब से ही कोस घर बनता आया है। इस समय तो फुल कोसघर है। वहां ही मन्दिर, वहां ही कोसघर। मुरली में भी बाबा ने समझाया था। यहां भी बच्चे आते हैं कोई–2 मन्दिर बनाते हैं उसमें हॉल भी बनाते हैं शादियों के लिए। उन्हों को तुम समझा सकते हो। तुम तो समझते हो हम वाममार्ग में आये जैसे कि कसाई बन गये थे। बाप ने प्रूफ देकर समझाया यह सारी दुनियाँ कोसघर है। आधा कल्प डबल अहिंसक अर्थात् पवित्र रहते हैं। कसाई नहीं बनते। अभी (बे)हद का बाप कहते हैं कसाई बनना छोड़ दो। बाप को तुमने बुलाया ही है कि आकर रास्ता बताओ हम पावन बन जावें। कोई तो झट समझ जाते हैं। कोई–2 बिख पर कितना झगड़ा करते हैं। बिरादरी से भी निकालने ....न करे। शुरू से लेकर यह झगड़ा चलता आया है। शुरू में भी इन्हों को कहा गया था कि चिट्ठी ले आओ .... हम ज्ञान–अमृत पीने जाते हैं। सभी ने फ्ट ने (फट से) लिख कर दे दी। उनको यह थोड़े ही पता था (ह)मारा बिख बन्द हो जावेगा। पति लोग कहे बिख दो। वह कहे हम तो ज्ञान–अमृत पी रहे हैं। हम बिख (कै)से देंगे? ज्ञान–अमृत छोड़ हम बिख क्यों खावें? जहां–तहां इस पर ही हंगामा होता आया है। समझते हैं यहां (आ)ने से मूत पीना बन्द हो जाता है। यह है ही कोसघर। हेल। अभी इनको हेविन बनाना है। नर्क का अर्थ ही (है) विषय वैतरणी नदी। विषय वैतरणी नदी में गोता खाते रहते हैं। वह है शिवालय, यह है वैश्यालय। बाबा तो (कह)ते रहते हैं कोई अच्छा समझदार आदमी हो या मन्दिर का ट्रस्टी हो उनको समझाओ। ट्रस्टी लोग भी कोस(घर) की सम्भाल करते हैं। उनको जब अमृत मिले तब पता पड़े। कोई को समझाने, बात–चीत क(रने) ..... समझ (चा)हिए। महारथी, घोड़े सवार, प्यादे तो हैं ना। इस ज्ञान में विघ्न बहुत पड़ते हैं। अत्याचा(र) ..... इसमें

बड़ी बहादुरी चाहिए। बाप में कब संशय होता है क्या? बाबा माना बाबा। सेमी बाबा तो होता नहीं। बेहद का बाबा है। बेहद का वर्सा देने आये हैं। हमने बाबा को बुलाया है कि बाबा आकर पावन बनाओ अर्थात् इस कोस से छुड़ाओ। अभी बाप कहते हैं इनको जीते तो तुम जगत–जीत बन जावेंगे। बाप आते ही हैं सबको रास्ता बताने। कहते हैं मैं हर कल्प आता हूँ। तुमको कोसघर से निकाल स्वर्ग का मालिक बनाता हूँ ; इसलिए बाबा ने पर्चे भी छपवाए हैं तो हरेक अपने से पूछे हम स्वर्गवासी हूँ या नर्कवासी हूँ ; परन्तु यह स्वर्ग है या नर्क, इतना भी समझते हैं नहीं। वह तो समझते हैं यही स्वर्ग है, नहीं तो क्या है? अरे, स्वर्ग में विकार होता नही। वह था रामराज्य। यह है रावण राज्य ; इसलिए इन पर्चों में भी सतयुगी अक्षर तरफ ल.ना. का चित्र और कलियुग अक्षर तरफ रावण का चित्र हो तो क्लीयर समझे। हम उस दुनियाँ के वासी हैं या इस दुनियाँ के वासी हैं? रावण राज्य में हैं तो ज़रूर आसुरी बुद्धि होंगे। मनुष्यों को तो यह भी पता नहीं है। सूर्यवंशी ज़रूर ऊँच होंगे। वह फिर राम को ऊँच समझ लेते हैं। भक्त लोग हैं ना। कृष्ण के भक्तों की राम के भक्तों से दुश्मनी होती है। राम के भक्त को कृष्ण के भक्त से। उनकी खुशबुएँ उनको न आवें। नाक बन्द कर देते हैं। रावण राज्य के रसम–रिवाज़ ही बिल्कुल अलग है। रामराज्य के रसम–रिवाज़ ही अलग। वह है हेवन, यह है हेल। बच्चे जानते हैं अभी बाप को बुलाया है आकर पतितों को पावन बनाओ। कैसे बनावेंगे यह थोड़े ही जानते हैं। बाप आकर बहुत सहज रास्ता बताते हैं। उठते–बैठते, चलते–फिरते, बाप को याद करना है। और–2 सम्बन्धी गुरू आदि जो भी याद आते रहते हैं उनकी याद छोड़ अपन को आत्मा समझो और बाप को याद करो तो तुम्हारे खाद निकल जावेंगे। कल्प–2 तुम ऐसे ही मनुष्य से देवता, देवता से मनुष्य बनते हो। कितना सहज है। पुरुषार्थ तो सब करते रहते हैं, जैसे कल्प पहले किया था। ज़रा भी फर्क़ नहीं। फिर भी माया के जो आधा कल्प मुरीद बने हैं, तो वह मुरीदपना निकले कैसे? घड़ी–2 बाप कहते हैं तुम मुझे याद करो ना। तुमने ही बुलाया है। आत्मा बुलाती है। बाबा आप आवेंगे तो हम आपे के ही बनेंगे। दूसरा न कोई। सिवाय आपके और हम कोई को याद नहीं करेंगे। बाप भी रोज़ कहते हैं मनमनाभव्। बाबा जो विश्व की बादशाही देते हैं उनको तुमशद नहीं करेंगे। मुझे बुलाया ही है आकर रास्ता बताओ। पावन बनाओ। वहां विकार होता ही नहीं। है ही योगबल ; इसलिए योगबल का गायन है। योगबल की पैदाईश होती है। अहिंसक देवताएँ कितने मीठे लगते हैं। अभी तुम बनने वाले हो। नर से नारायण बनने की युक्ति बाप ही बतलाते हैं। बहुत सहज है। तुमने ही बाप को बुलाया है। बाबा, आकर भक्ति का फल दो। भक्ति करते–2 तमोप्रधान बन गये हैं। दुगर्ति को पाया है। फिर बाप आकर फल देते हैं अर्थात् सदगति देते हैं। भक्ति कोई कितना भी करे, माला फेरे, शास्त्र आद(दि) पढ़े ; लेकिन मुझे कोई भी मिल नहीं सकता। मैं आता हूँ बहुत जन्मों के अंत वाले जन्म में। सबसे बहुत जन्मों के अंत में तो तुम ही होंगे ना। जो फिर देवी–देवता बनने वाले हो। मनुष्यों की कितनी पत्थर बुद्धि है जो कुछ भी समझते नहीं। कहते भी हैं हम पापी, पतित, नीच हैं। पतित कहा ही जाता है विकार में जाने वाले को। क्रोध वाले को नहीं कहा जाता। कितना वण्डर है। बुलाते (भी) हैं पतित–पावन.....; परन्तु अपन को पतित सम(झ)ते नहीं हैं ; इसलिए मनुष्यों को लगाने लिए बाबा कहते ऐरोप्लेन से पर्चे गिराओ। मन्दिरों में जहां शादियाँ होती है उनको समझाओ भगवान का मन्दिर है ना। भगवानुवाचः काम महाशत्रु है। इनपे जीत पाये जगतजीत बनना है। बाप कहते हैं मामेकं याद करो। कल्प–2 तुमको (य)ह समझाता हूँ। यह गीता है ना। पहले नम्बर में तुम ही बिछुड़े हो। आत्माएँ परमात्मा अलग रहे बहुकाल ..... से लेकर आये हैं पार्ट बजाने। तुम ऑलराण्डर हो ना। तुमको ही कथा सुनावेंगे। जो ऑलराण्डर ही नहीं उन(से) क्या ताल्लुक? तुम्हारा धर्म बहुत सुख देने वाला है। विकारों से तो अभी नफ़रत आती है। यह निर्विकारी थे। ....वैष्णव का भी सच्चा अर्थ कोई नहीं सम(झ)ते। तुम सम(झ)ते हो हम विष्णु के सन्तान माना बन रहे हैं। तुम

रूद्र के माला हो। बाप कहते हैं विकार में जाना तो महापाप है। इनके कारण भारत की क्या हाल हुई है। साधु–संत आद(दि) सभी भक्तिमार्ग में हैं। ज्ञान तो एक बाप को ही है। वह गुरु लोग भक्ति के हैं। भक्ति माना दुगर्ति। उन गुरुओं के फिर चरण धोकर पीते हैं। साधु लोगों को भी भ्रष्टाचारी तो कहेंगे ना। कोस से तो पैदा हुये हैं। उनका थोड़े पता है। वह समझें तो रिवोल्यूशन हो जाये। अभी तो इन्हों की ही बड़ी राजाई है। आजकल तो दुनियाँ में देखो क्या हो रहा है। कोई किसकी मानता नहीं। पोप का भी नहीं मानते हैं। प्राईममिनिस्टर का भी नहीं मानते हैं। बिल्कुल पत्थर बुद्धि हैं। खुद पत्थर बुद्धि होने कारण भगवान को भी पत्थर–ठिक्कर में ठोंक दिया है। अभी बाप सारी दुनियाँ को ही बदलते हैं। कलियुग से सतयुग कौन बनाते हैं यह किसको भी पता नहीं। अभी तुमको महावीर बनना चाहिए। शादियों के लिए हॉल बनाते हैं। उनको समझाओ यह क्या? एक तरफ मन्दिर और वहां ही कोसघर। यह कोस कराना तो बन्द करो। शिव बाबा कहते हैं इन विकारों पर जीत पहनी तो जगत जीत बनेंगे। बड़ी मन्ज़िल है। बाप को याद नहीं करते हैं तो फिर मूंझते हैं। बाबा को भूल जाते हैं। अरे, बाबा को थोड़े ही भूलना चाहिए। बाप कहते हैं भल गृहस्थ व्यवहार में रहो 8 घंटा वह सर्विस करो। 8 घंटा आराम करो। 8 घंटा तो सर्विस में लगाओ। धीरे–2 कदम बढ़ाते रहो। बाप कहते हैं कल्प–2 ऐसे होता रहेगा। बिख के लिए तुम मार खाती रहेंगी। अभी आस्ते–2 हड्डियाँ न(र्म) होती रहती है। सेना तुम्हारी बढ़ती जावेगी। फिर वह सेना हार खा लेंगे। तुम्हारी में ताकत आवेगी। बाप को कहते हैं सर्वशक्तिवान। तो मनुष्य समझते हैं कुछ भी कर सकते हैं। बाप कहते हैं मैं आया हूँ तुमको रास्ता बताने। बाकी ऐसे थोड़े ही कि मुर्दे को ज़िन्दा करूँगा। मुझे बुलाया है कि आकर पतितों को पावन बनाओ। काम कटारी चलाने वाले बड़े कसाई हैं। यह बहुत दुःख देने वाला है ; इसलिए बाप कहते हैं इनको जीतो। कल्प–2 तुम जीतते हो। रामराज्य तुम ही स्थापन करते हो। कितना नशा होना चाहिए। सतसंग तारे कुसंग बोरे। कुसंग है रावण का। सतसंग है राम का। राम वह नहीं जिसकी सीता चोरी हो गई। वह है भक्तिमार्ग की बातें। ज्ञान, भक्ति ,फिर है वैराग्य। सारी पुरानी दुनियाँ से वैराग्य। अभी नाटक पूरा हुआ। हम जाते हैं अपने घर। बाप कहते हैं घर चलो। अभी यह पुराने कपड़े हो गये हैं; क्योंकि इनसे हम बहुत–2 पार्ट बजाया है। बहुत पुराना हो गया है। तो तुम बच्चों को अन्दर में आना चाहिए हम .... ब्रह्मा कुमार–कुमारियाँ अपने लिए स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं। कोई हिंसा की बात नहीं। देवताओं को कहा जाता है अहिंसक परमोधर्म। यहां तो अबलाओं पर बहुत अत्याचार होते हैं। कसाई लोग हड्डियाँ भी तोड़ देते हैं। बाप समझाते हैं ये कोसखाना बन्द करो। पावन बनने बिगर वापस कब जा नहीं सकते हैं। बाप हेवन ब(ना) कर ही जावेंगे। अभी पढ़ना है। नई दुनियाँ में फल मिलना है। तुम भक्त थे। अभी ज्ञान ले रहे हो। यह सत्यना. की कथा। तीजरी की कथा। बाबा ज्ञान का तीसरा नेत्र दे रहे हैं। पावन भी बनना है। पतित बना...फिर मुख से निकलेगा नहीं। काम महाशत्रु है। खुद मरते हैं तो दूसरे को कहेंगे कैसे? यह भी जानते .... झाड़ बढ़ता जावेगा। जंगली आदमी फिर जंगल के सैम्पलिंग लगाते रहते हैं। शिरोमणी मनाते रहते हैं। ..... हो यह देवी–देवताओं की सैम्पलिंग कहां वह। रात–दिन का फर्क है। वह जंगली का काम करते हैं। तुम फूलों की सैम्पलिंग लगा रहे हो। इन सभी बातों को समझाना, धारण करना है। सेन्टर भी खोलना है। जल्दी–2 घेराव डालना है। ..... शहरों में घेराव करेंगे तो आवाज़ निकलेगा। बाबा ने यह भी कहा यह स्लोगन बनाओ शंकराचार्यानुवाचः (ना)री नर्क का द्वार है। तुम फिर कहते हो ज्ञान सागर पतित–पावन त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाचः नारी स्वर्ग का (द्वा)र है। तुम अभी स्वर्ग का द्वार खोल रही हो। बाप कहते हैं पवित्र बनो। काम महाशत्रु है। शंकराचार्य तो ..... नहीं कहेंगे। वह तो पुजारी है ना। तुमको अभी ज्ञान मिला है तो तुम कह सकते हो। (ज्ञा)न और भक्ति की है (लड़ाई)। इसमें ही सहन करना पड़ता है। डरना थोड़े ही है। इसमें कोई संशय उठने की बात ही नहीं। बाप कहते हैं मैं आता ही हूँ कोसखाने को हेवन बनाने। तुम बहुत भाग्यशाली हो। तुम पदमापदभाग्यशाली हो। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग। नमस्ते।